डाक्टर लोहिया

(विचार और व्यक्तित्व)

लेखक
श्री [illegible]न्द्र कुमार सिन्हा

प्रबन्धक
श्री रामबाबू

मार्ग-दर्शक
श्री राजबहादुर शास्त्री

प्रकाशक—श्री शैलेन्द्र कुमार सिन्हा

सहयोगी—

(१) श्री ओम प्रकाश शर्मा (कार्यालय मंत्री), सोशलिस्ट पार्टी (लो०) बिहार, पटना

(२) श्री ब्रजनन्दन प्रसाद सिंह (क्षेत्र मंत्री सोशलिस्ट पार्टी (लो०) पुनपुन; पटना

(३) श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह, संयुक्त मंत्री सोशलिस्ट पार्टी (लो०) पुनपुन; पटना

(४) श्री सज्जनधारी सिंह, संयुक्त मंत्री; जिला सोशलिस्ट पार्टी (लो०) पटना

(५) श्री शिवनारायण सिंह, ग्राम—कोरीयावां; मसौढ़ी, (पटना)

सोशलिस्ट पार्टी (लोहिया-वादी) को श्रद्धापूर्वक समर्पित

—शैलेन्द्र कुमार सिन्हा

दो शब्द

डाक्टर राम मनोहर लोहिया न केवल इस राष्ट्र के बल्कि विश्व के समस्त पीड़ित मानवता के महान उद्धारक और समाजवाद के प्रणेता थे। पिछले कई शदियों में गौतम बुद्ध और महात्मा गाँधी को छोड़कर ऐसा महा-मानव इस धराधाम पर अवतीर्ण नहीं हुआ था। गौतम बुद्ध और महात्मा गाँधी के बाद निःसन्देह डाक्टर लोहिया सबसे बड़ा जन-नायक और तारणहार थे जिन्होंने अपने कर्तृत्व से अन्याय और अनीति के खिलाफ सतत संघर्षशील रह-कर और मौलिक चिन्तन देकर विश्व का महान कार्य किया है। देश में और विदेशों में बहुत मनीषी चिन्तक इनके व्यक्तित्व और चिन्तन पर लेखनी उठाई है। मेरी अल्पबुद्धि में उनके सारे चिन्तन का समावेश सम्भव नहीं है। अतः इसके लिए मैं क्षमा याचना करता हूं। मैं उस महान विभूति के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं कि उनके चिर आत्मा को शांति मिले।

तारीख २५-९-१९७२

शैलेन्द्रकुमार सिन्हा

परिचय

श्री राज बहादुर शास्त्री (मार्ग दर्शक) : पटना जिला के विक्रम थाने के काबनिसरपूरा ग्राम के निवासी श्री काशी विश्व विद्यालय से राजशास्त्र में एम०ए०, श्री काशी विद्यापीठ से शास्त्री और हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त। लोकतंत्र और समाजवाद तथा गाँधी वाद के मनीषी और चिन्तक। लोहिया विचार के कट्टर समर्थक और विचारक अभी पटना जिला सोशलिस्ट (लोहियावादी) पार्टी के वर्त्तमान अध्यक्ष हैं। और बिहार राज्य सोशलिस्ट (लो०) कार्य समिति के सदस्य भी हैं।

श्री शैलेन्द्र कुमार सिन्हा (लेखक): पटना जिला के पुनपुन थाना कमलपुरा ग्राम के स्वर्गीयश्री महावीर शरण सिंह के छोटे पुत्र जिनका जन्म ४-१-१९४७ को हुआ था। बी०एस०सी० (अन्तिम वर्ष) तक शैक्षणिक योग्यता, एक कर्मठ उत्साही, कुशाग्र बुद्धि वाला, समाजवादी युवक। लोहिया व्यक्तित्व से प्रभावित और पटना जिला सोशलिस्ट (लोहियावादी) पार्टी के संयुक्त मन्त्री हैं।

श्री राम बाबू (प्रबन्धक) : पटना जिला के पुनपुन थाना के वलीपुर गाँव का निवासी। समाजवादी आन्दोलन में बचपन से ही समर्पित जीवन। अपना पूरा समय सार्वजनिक जनता की सेवा में अर्पण करनेवाला। वर्त्तमान में सोशलिस्ट (लोहियावादी) पार्टी पटना के महामन्त्री हैं।

डाक्टर लोहिया
(विचार और व्यक्तित्व)

वंश परिचय :—समाजवाद के महान प्रणेता स्वर्गीय डाक्टर राम मनोहर लोहिया का जन्म फैजावाद उत्तर प्रदेश के अकबरपुर कस्बे में २३ मार्च, १९१० ई० में हुआ था। इनके पिता का नाम हीरा लाल लोहिया था जो पूज्य महात्मा गाँधी के कट्टर अनुयायी और पूर्ण समर्पित कार्यकर्त्ता थे। अतः पिता से लोहिया जी बहुत प्रभावित थे और आठ साल की उम्र से ही स्वतन्त्रता संग्राम में अभिरूचि लेना आरम्भ कर दिया था। लोहिया परिवार का राष्ट्रीय आन्दोलन में किसी भी परिवार से कम योगदान नहीं रहा है। इनकी माता का नैहर चम्पारण जिले के चनपटिया कस्बे में चुनचुन वाला परिबार में था। उनकी माँ का नाम चन्दरी था।

शिक्षा एवं व्यक्तित्व निर्माण—

डाक्टर राम मनोहर लोहिया काशी विश्व विद्यालय में कुछ दिन पढ़ने के बाद कलकत्ता विद्यासागर कालेज से बी. ए. की परीक्षा पास किये। उसके बाद १६२६ में विलायत गये पर वहाँ से उन्हें ज्यादा आकर्षण जर्मनी के लिए था। अतः वहीं उनकी शिक्षा हुई।वहाँ की राजधानी बर्लिन में पूरी शिक्षा प्राप्त किया और उन्हें वर्लिन विश्व विद्यालय ने डाक्टर की उपाधि से भूषित किया।

भारतवर्ष में गांधी और लोहिया दो महान प्रतिभाएँ विश्व को मौलिक मार्ग दिये हैं। गाँधीजी के राजनीतिक उत्ताराधिकारी गाँधी के विचार रूपी विरासत की रक्षा नहीं कर सके उलटे सत्ता में आकर आडम्बरपूर्ण और शान शौकत नजारा खड़ा कर गाँधी विचार की आतमा को खत्म कर दिया। गाँधीजी के अध्यात्मिक अनुयायी विनोवा भी केवल करूणा को ही पकड़ा और सत्याग्रह को तिलांजलि दे दी जिसके कारण गाँधीवाद अरक्षित रहा। इसके वावजूद भी गाँधी विचार जिन्दा रहा हैं एक मात्र लोहिया जी के कारण। अतः गाँधी को दो अनुयायियों लोहिया और नेहरू में बुनियादी

मतभेद था। लोहिया जी विचार से गाँधीजी के समीप थे और असली अनुयायी थे। हिन्दुस्तान की राजनीति को जनाभिमुख बनाने की जो प्रक्रिया लोहिया ने आरम्भ की वही समाजवादियों का अमर पथ है। डाक्टर लोहिया के सामने क्रांति की सम्यक मूर्ति खड़ी थी। गाँधीजी की तरह "पवित्र साधनों के द्वारा ही पवित्र साध्य की प्राप्ति हो सकती है।" इस पर वे अडिग थे।

वे पहले व्यक्ति थे जब सर्व-प्रथम भारतीय संसद में प्रधान मन्त्री नेहरू पर चोट करते हुए आर्थिक विषमता के तथ्यों को उद्घाटन करते हुए देश का ध्यानाकर्षण किया था। जातिनीति द्वारा समाज के सबसे दलित और वंचित लोगों को डाक्टर साहब ने ऊपर उठाया। भाषानीति द्वारा समांती-भाषा और लोक-भाषा के फर्क को दर्शाया और लोकशाही जिन्दा रखने के लिए लोकभाषा की अनिवार्यता स्वीकार किया। उन्होंने आर्थिक विषमता को मिटाने के लिए दामवांधो नीति का प्रतिपादन किया। इसी प्रकार जहरीली सम्प्रदायिकता के निमूंलन के लिए हिन्द पाक एक संघ बने का नारा बुलन्द किया। इसके साथ-साथ सीमा सुरक्षा के लिए हिमालय बचाओ आन्दोलन का शुरूआत किया।

विदेश नीति में तृतीय शिविर की स्थापना से ही विश्व में स्थायी शांति हो सकती है डाक्टर साहब का घोषित मत था। वे इस देश के प्रथम राजनेता थे जिन्होंने मार्क्सवाद पर प्रहार किया और एशिया, अफ्रिका में साम्यवाद को ठहती हुई यूरोपीय सभ्यता का अन्तिम हथियार है ऐसा कहा। डाक्टर साहब का सपना था कि भारत अपने भविष्य के बारे, में पूरा सर्वांगीण चित्र उपस्थित करें न कि अधूरा। वे चाहते थे कि भारत के दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक ऊँचे दर्जे का इन्जीनियर भी हो।

भारतीय संसद में प्रधान मंत्रीनेहरू को चेतावनी देते हुए उन्होंने कहा था कि संसद में नौकर की तरह रहो मालिक बनने की झूठी कोशिश न करो। इसी तरह की एक सबक है जब पूज्य गाँधीजी के निधन के बाद उनकी अर्थी जिस गाड़ी पर जा रही थी पंडित नेहरू जूता पहने ही उस पर चढ़ गये थे तो डाक्टर साहब जूता उतारने की कड़ी फटकार सुनाई थी और नेहरू को जूता उतारना पड़ा था।

डा० लोहिया ने पूँजीवाद और साम्यवाद दोनों जोड़ए भाई हैं इसका स्पष्टीकरण किया ।

वे मजदूरों और किसानों के मसीहा थे । उन्होंने किसानों और खेत मजदूरों की वेदखली, फसल की खरावी, और भूमि सुधार के लिए आन्दोलन किया । वे देश के खेतीहर और मजदूरों को ही मालिक बनाना चाहते थे अत: गाँव के उत्पादन, स्वामित्व, व्यवस्था, योजना, शिक्षा आदि सभी चौखंभा राज्य के आधार पर ग्राम के लोग करें ऐसा चाहते थे । डाक्टर साहब सभी प्रकार के पब्लिक अंगरेजी प्राइमरी स्कूल की खातमा चाहते थे । वे प्रत्येक नागरिक में समानता लाना चाहते थे । उनका समाजवाद सम्पन्नता और समता पर आधारित था । वे निर्गुण समाजवाद मे ज्यादा सगुण पक्ष पर जोर देते थे । इसी का कारण था कि डाक्टर साहब ने गैर कांग्रेसवाद का नारा देकर कांग्रेस का गढ़ तोड़ दिया था । अफसोस है कि गैर कांग्रेसवाद के दूसरे चरण में वे नेतृत्व करनें के लिए नहीं रहे ।

उनके जीवन में लोहिया के सामने एक ही रास्ता रह गया था, कि भारत की अवरुद्ध क्रांति के मार्ग को पुन: उन्मुक्त करें । इसके लिए उन्होंने उन शक्तियों और समस्याओं पर ऊँगली रखी जो भारतीय क्रांति के मार्ग में बाधक हैं और उनके विरुद्ध व्यापक आन्दोलन संगठित किये । वे सात प्रकार की क्राँतियों को सफल बनाना चाहते थे—अंगरेजी के प्रभुत्व के खिलाफ, जाति प्रथा के खिलाफ, दिमागी जड़ता और गुलामी के खिलाफ, नर-नारी समानता के लिए, दामो के लूट के खिलाफ, शासक वर्ग की विलासिता के खिलाफ, सादगी और कर्त्तव्य की भावना के लिए, सीमा सुरक्षा के लिए, देश के नकली बंटवारे के खिलाफ, गरीब किसानों को राहत देने, और नये ढंग से खेती कारखाने के विकास के लिए । इसके लिए उन्होंने गांधी जी का सिविल नाफरमानी हथियार को अपनाने और संगठित करने का आग्रह किया । १२ अक्टूबर १९६७ का वह दिन राष्ट्र के इतिहास में कालादिन है जिस दिन आपरेशन के बाद महीनों काल से सतत् जूझते हुए डाक्टर साहब को क्रूर नियति ने हम से छीन लिया था ।

जो भी हो अब उनका पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है पर लोहिया विचार अनन्त काल तक नि:संदेह आने वाली पीढ़ी के लिए पथप्रदर्शक रहेगा ।

१३-१४ मई १६७२, इलाहाबाद प्रथम राष्ट्रीय सोशलिस्ट (लो०)
पार्टी सम्मेलन में स्वीकृत

समाजवादी आधारशिला

से

देश की आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि जब तक वैज्ञानिक आधार पर दाम मंहगाई, चोर बाजारी पर नियंत्रण नहीं होगा तब तक आर्थिक विषमता भूखमरी और लुट खसोट को रोकना सम्भव नहीं है। आज स्थिति यह है कि सस्ती सरकार दूकानों की कीमत अधिक होती है उससे अलग चोरवाजार की कीमत चलती है। साल ६ महीने के बाद चोर बाजार की कीमत उचित दर पर हो जाती है। यह इस ढंग का विश्लेषण किया जाय तो आजादी के बाद भावों और दामों की रफ्तार में जो चढ़ाव नजर आयेगा वह भयानक है। साथ ही यह भी पत्ता चलेगा कि सरकार इस विषमता की साझादार और जिम्मेदार है। सरकार और चोर बाजार का रिश्ता एक प्रकार से लुका-छिपी और मिली-भगत का रिश्ता है। दामों की लूट को खत्म करने के लिए लोक कल्याणकारी दाम नीति के ९ आधार हैं :—

(१) रोजमर्रा की जरूरतों की कारखानों में बनी चीजों का दाम लागत खर्च के डेढ़ गुने से अधिक नहीं होगा। इसमें सभी कर और मुनाफे शामिल होंगे।

(२) दो फसलों के बीच अनाज के दामों के उतार चढ़ाव पर नियंत्रण किया जायेगा। इस उतार चढ़ाव को सोलह प्रतिशत से अधिक नहीं होने दिया जायगा।

(३) किसान को अपनी उपज का उचित दाम मिले, जो उसके लागत खर्च और मामूली जीवन स्तर को पूरा करे।

(४) कारखानों के और खेती के दामों में समता हो।

(५) समता के इसी सिद्धान्त का आग्रह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में किया

जायगा, ताकि अमीर देशों द्वारा गरीब खेतिहर देशों का शोषण समाप्त हो ।

(६) अनाज के थोक व्यापार का समाजीकरण किया जाय ।

(७) थोक व्यापार का समाजी करण इस प्रकार होगा कि छोटे फुटकर व्यापारियों की सेवाएँ राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्त्ति में लगाई जा सके ।

(८) जब तक देश में भूख को खत्म नहीं कर दिया जाता, भोजन की वस्तुओं का निर्यात बन्द कर दिया जाय ।

(९) अनाज और खाने पीने की वस्तुओं पर से बिक्री कर समाप्त कर दिया जायगा ।

★

आज का चिन्तन

भारतीय लोकशाही आज परीक्षा की दौर से गुजर रहा है। स्वस्थ्य विरोध पक्ष के अभाव में लोक शाही तानाशही में परिवर्तित होने की ओर आरूढ़ है। विरोध की सारी भूमिकाएँ नष्ट हो गई हैं। नैतिक मूल्यों में वेहद गिरावट आई है जिससे हताशा और निराशा का वातावरण आज सर्वत्र है। कठोर सामंती एकता के जकड़न में सारा मुल्क छटपटा रहा है। साम्प्रदायिकता की जहर ने धर्म निरपेक्षता के संकल्प को समाप्त कर दिया है। आदिवासियों, जन-जातियों और पिछड़ी जातियों का शोषण और दमन पहले से ज्यादा है। इसका प्रमाण दिल्ली इत्यादि की घटनाएँ है। पूँजी और सत्ता का गठबंधन प्रत्येक क्षेत्र में होने से अब साधारण लोगों को राजनीति में दिलचस्पी लेना आसान काम नहीं रह गया है। हर क्षेत्रों में प्रशासक केन्द्रीकरण की नीति अपना कर जनवाद को कत्ल कर रहे हैं। कमर तोड़ महंगाई और भूखमरी ने जन साधारण को किंगकर्त्तव्य विमूढ़ बना दिया है। क्षेत्रीय विषमताएँ बहुत ज्यादा बढ़ी हैं। बेकारी और रोजगारी का समाधान सरकार के बूते के बाहर है।

एक तरफ तो ये बातें चली जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप लोगों में विद्रोह की भावना जाग्रित हुई है। छात्र विद्रोह, शिक्षक विद्रोह, सिविल नाफरमानी द्वारा जन आन्दोलन का शुरूआत हो गया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि इस सब को सही दिशा में मार्ग दर्शन और नेतृत्व दिया जाय। बेकारी और बेरोजगारी के सम्बन्ध में समाजवादी ढंग से सोचने और दूर करने के लिए संघर्ष के रूपों को जागृत करना होगा। युवा जगत प्रत्येक देश का भविष्य होता है और उसके व्यक्तित्व पर राष्ट्र व देश का भविष्य निर्भर करता है। आज वह दर-दर गली-गली बेरोजगारी और बेकारी की हालत में आपमानित हो रहा है। हमें बेकारी हटाओ आन्दोलन के लिए संगठित बेकारों की फौज खड़ा करना पड़ेगा।

देश के भविष्य के दिशा निर्धारण में हमारी दृष्टि स्पष्ट और साफ रहनी चाहिए। आज कुर्सी काँग्रेस और सर्वाधिकार साम्यवाद का गठबन्धन है। कांग्रेस का तो कोई दर्शन नहीं परसाम्यवाद का अवश्य दर्शन है

अतः खतरा मुल्क में कम्युनिस्ट तानाशाही की हो सकती है। अगर हम जागरूक न रहे तो। इसलिए अन्तिम द्वन्द्व साम्यवादियों और समाज वादियों के बीच ही होगी। समाजवादी में भी इस देश में कुछ दिग्भ्रमित समाजवादी हैं जो इन्द्रा की नीति में प्रगतिशिलता का दर्शन करते हैं। वे साफ तौर पर कुर्सी कांग्रेस के प्रबल समर्थक हैं। उनसे हमें सदैव होशियार रहना है। गाँधी और लोहिया का पथ ही हमारे लिए और सारे विश्व के लिए त्राण का श्रेयस्कर मार्ग हो सकता है। मेरा यह स्पष्ट विचार है चाहे मार्क्सवादी जो हों वे सभी लोक-शाही के दुश्मन है अतः उनके साथ हमारी मित्रता चल नहीं सकती।

इसलिए हमें अन्याय, अनीति और विषमता की लड़ाई लड़ने के लिए जो व्यूह रचना करनी पड़ेगी उसमें गांधी और लोहिया के कट्टर अनुयायियों को आव्हान करना पड़ेगा। गाँधी के भी आज का मार्क्स की तरह अनुयायी पथ भ्रष्ट और गुमराह हो गये हैं। सरकार मुखापेक्षी होने के कारण उनकी न तो शक्ति बढ़ी और न जन आधारित संगठन ही हुआ। अत्याग्रह अस्त्र जो गाँधी जी ने दिया था उसको तेज करने के बजाय उसकी आवश्यकता को इनकार इन लोगों ने किया यह सबसे देश के लिए घातक घटना है।

संगठन कांग्रेस के नेता मुरारजी इत्यादि भी जो गाँधी वाद का ढोल पीटते हैं उन्हें भी अगर लोक शाही को जिन्दा रखना होगा तो सिविल नाफरमानी के आन्दोलन में शीघ्र आना ही पड़ेगा। चूंकि ये लोग बहुत दिन सत्ता में रह चुके हैं अतः अभी उसका व्यामोह नहीं गया है। मेरा स्पष्ट मत है इस दिशा में इन लोगों को सक्रिय करने के लिए सोशलिस्ट (लो०) पार्टी को पहल अवश्य करना चाहिए।

आज भारतीय लोकतन्त्र में व्यक्ति और समाज की मान्यताओं में भी गम्भीर परिवर्त्तन कीं आवश्यकता है परिवर्त्तन केवल भौतिक प्रक्रिया मात्र नहीं, अपितु इसके लिए व्यक्ति की प्रेरणाओं और संस्कारों का परिक्षण एवं शोधन आवश्यक है। सतत मानसिक जागरूकता एवं अन्याय के खिलाफ प्रतिकारात्मक कदम उठाने की तैयारी ही एकमात्र मार्ग है।

इस महान लक्ष्य की पूर्ति के लिए डाक्टर लोहिया द्वारा प्रतिपादित सप्त

क्रांतियों के आधार पर सगुण समाजवाद को साक्षात्कार करना पड़ेगा । इसके लिए सिविल नाफरमानी को संगठित कर सब प्रकार की यथा सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विषमताओं को समाप्त करना पड़ेगा । इस कार्य को अगर हम आगे बढ़ा सकें तो निःसंदेह राष्ट्र और विश्व में विषमता मिटेगी समता आयेगी नवीन चेतना का स्पन्दन नये जागरण के साथ अवश्य होगा ।

★

विद्यार्थी समाज के एक प्रतिनिधि (श्री सत्येन्द्र कुमार सिन्हा, कालेज आफ कार्मस बी० ए० सी० अन्तिम वर्ष)

ने आज के प्रशासन का चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया है। मैं उसे प्रेषित करता हूँ।

(भारतीय शासक-वर्ग का चरित्र):—हमारे देश का शासक-वर्ग आज बहुत ही ठुलमुल लचर, और क्रान्ति-विरोधी नीति अपनाया है। वह जनता को अन्धविश्वास में फसाये रखता है, निम्न मध्यवर्गीय सुविधा और सुरक्षा का मोह भी दर्शाता है। साथ ही साथ शासक यह भी नहीं चाहता कि पूँजीपतियों का अन्तर्विरोध हो। आखिर ऐसा क्यों? इतिहास साक्षी है कि पूँजीपति-वर्ग ने हमेशा ही राष्ट्र और धर्म का प्रयोग अपने नीहित स्वार्थों की हिफाजत के लिए किया है। क्या ब्रिटिश शासन के जमाने में हमारे देश का पूँजीपति-वर्ग अँग्रेजों को हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के विरूद्ध सहायता नहीं दिया था और जब भारतीय जनता द्वारा अँग्रेजों को खदेड़ दिये जाने पर वही पूँजीपति-वर्ग काँग्रेस को आर्थिक सहायता देकर राष्ट्रीय आन्दोलन का सूत्रधार बन बैठा और पुनः आजादी के बाद से देश के शासन का संचालन अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए कर रहा है। यह शासन यन्त्र देश की जनता को लूट रहा है। साथ ही साथ इस लूट में विदेशी पूँजीपतियों भी शामिल है। स्वर्थों का यह चक्रव्यूह सारे देश को गरीबी और बेरोजगारी की चक्की में पीस रहा है। सरकार द्वारा जो भी नीतियाँ अपनायी जाती हैं, उसका उद्देश्य इस चक्रव्यूह की सुरक्षा ही होती है। इस प्रकार बंगला देश के प्रश्न भारत सरकार ने सारे देश की जनता और राजनीतिक दलों द्वारा माँग करने पर भी शुरू में बंगला देश को मान्यता नहीं दी और फिर अपनी सशस्त्र सेनाएँ भेजकर सत्ता अवामी लीग को सौप दी। क्या यह सच्चाई नहीं है कि यदि शुरू में ही मान्यता देकर बड़े पैमाने पर अस्त्र-शस्त्रों की सहायता दी जाती तो बंगला देश की जनता स्वयं ही तानाशाह यहिया खाँ की सेना को कुचल देती और इस प्रकार सम्भवतः भारत के एक भयानक युद्ध से बच जाने की पूरी सम्भावना हो जाती, पर ऐसा भारत सरकार ने क्यों नहीं किया, क्योंकि देश के पूँजीवादी सामन्ती शासक-वर्ग को विशेष लाभ नहीं होता। देश पर कितनी भी भारी विपत्ति क्यों न हो उस समय भी सरकार उन्हीं के माध्यम से चलती है। इस तरह जिस पूँजीवादी स्वार्थों

की रक्षा में संलग्न पार्टी के नेता या मन्त्री जो कुछ कहते हैं या जो कुछ सरकारी रेडियो कहता है वही बिड़ला, डालमियाँ का प्रेस अखबार में प्रकाशीत करता है। जनता वास्तविकता को जान नहीं पाता है। यही वजह है कि हम बंगला देश में हुए बर्बर दमन का तो विरोध करते है लेकिन हाल ही में जनतन्त्री सरकार द्वारा किये जा रहे 'दमन और हत्या कांड की ओर से आँखें मूँद लेते हैं।

यहाँ तक कि शासक-वर्ग ने अँग्रेजी को दीर्घ काल तक राष्ट्रभाषा बनाये रखकर भाषा के प्रश्न को किस तरह उलझाया है, यह आज सबको ज्ञात है। प्रश्न का सबसे आसान हल तब यह था और आज भी है कि अँग्रेजी को हटाकर उसकी जगह सभी क्षेत्रीय भाषाओं को स्थापित किया जाय बाद में देश के सभी लोग स्वेच्छा से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लेंगे जब सोशलिस्ट सरकार बिहार में बनी थी तो उन्होंने अँग्रेजी को एच्छिक विषय बना दिया था पर आज की सरकार ने अँग्रेजी अनिवार्य बना दिया यह तानाशाही नीति एवं सामंती नीति का परिचायक है।

समाचार (समाजवादी आन्दोलन के बढ़ते चरण)

आर्यावर्त २० सितम्बर १९७२

गिरफ्तारी और रिहाई

पटना, १९ सितम्बर। बिहार राज्य सोशलिस्ट पार्टी (लोहियावादी) पार्टी के तत्वावधान में बिहार को सूखा क्षेत्र घोषित करने अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करने के लिए आज राज्य भवन के समक्ष सत्याग्रह किया गया जिसमें ७५ व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गए। गिरफ्तार व्यक्तियों में श्री मणिराम बागड़ी, श्री सीताराम सिंह संसद सदस्य, श्री बाबू लाल शास्त्री, पुरन चन्द, विनायक यादव, चार विधायक श्री राम विलास पासवान, (राज्य मन्त्री) श्री राज बहादुर शास्त्री (अध्यक्ष, पटना) श्री विश्वनाथ मोदी (हजारीबाग) श्री केशव शास्त्री (शहाबाद) श्री विनय भूषण (सचिव मुजफ्फरपुर) श्री राम बाबू (सचिव पटना) श्री शैलेन्द्र कुमार सिन्हा (संयुक्त सचिव पटना) श्री ब्रजनन्दन प्रसाद सिंह (क्षेत्र मन्त्री पुनपुन) श्री योगेन्द्र प्रसाद सिंह (संयुक्त मन्त्री पुनपुन) आदि प्रमुख थे। सभी गिरफ्तार सत्याग्रहियों को बाद में रिहा कर दिया गया।

हिन्दुस्तान।

नई दिल्ली, शुक्रवार २२ सितम्बर, १९७२ ई०

राजनारायण, ठाकुर सहित ४०० सोशलिस्ट गिरफ्तार।

वाराणसी, २१ सितम्बर (प्रेस ट्रस्ट) श्री राज नारायण, कर्पूरी ठाकुर राम सेवक यादव और प्रभु नारायण सिंह के नेतृत्व में आज यहाँ मजिस्ट्रेट की अदालत के सामने धरना देते हुए लगभग ४ सौ सोशलिस्ट कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गये।

ग्रामीण विकास शुल्क वापस लेने उचित सिंचाई दर लागू करने और वाराणसी में पुलिस के कथित अत्याचारों की न्यायिक जाँच की माँग के समर्थन में पार्टी ने प्रारम्भ में एक जूलुस भी निकाला।

प्रधान मन्त्री जी, तारीख १९-९-१९७२

बिहार आकाल, भूखमरी के पंजे में बुरी तरह जकड़ा हुआ है। पाँच करोड़ आदमियों को हफ्ते में पाँच-सात दफा ही खाना मिल पाता है। जिसके फलस्वरूप भूखमरी से मौत हुई और हो रही है। मरने वालों में सौ से ९० फीसदी हरिजन, आदिवासी और पीछड़े और अल्प संख्यक एवं बच्चे हैं। जो रास्ता सरकार ने अपनाया है वह बिहार की जनता को जिन्दगी से खिलवाड़ है। आकाल को बल देने के लिए महंगी और बेकारी यौवन पर है। ऐसे मौके पर बिहार सरकार जनता की जवान भी काट लेना चाहती है और उन्होंने अंग्रेजी अनिवार्य कर दिया। १८ सितम्बर को भूख से पीड़ित लाखों लोगों ने विधान सभा के सामने प्रदर्श करके बिहार सरकार से मांग किया कि बिहार को अकाल क्षेत्र घोषित करें तथा अंग्रेजी अनिवार्य पढ़ाई को पुनः शुरू करने को साजिश की है उसे वापस लें। अकाल घोपित नहीं करके बिहार के मुख्य मन्त्री ने बिहार की जनता के साथ विश्वासघात किया है। अंग्रेजी को पुनः पढ़ाई शुरू कर बिहार की जनता की जूबान को कत्ल किया है।

आप बिहार अकाल देखने आये हैं। ये सब भूलभूलैया होगी कि अगर आप बिहार को तत्काल अकाल क्षेत्र घोषित नहीं करेगी और आप सारे पापों की जिम्मेवार होगी। हम आप से अनुरोध करते हैं कि बिहार को तत्काल अकाल क्षेत्र घोषित करें। अंग्रेजी को लागू होने से रोके तथा बेकारी और मंहँगी से बचाये।

वक्त इन्तजार नहीं किया करता है। ज्वालामुखी पहाड़ पर भूखी जनता खड़ी है। सम्भलो न मालूम कब भटे। पुलिस को लाठी गोली जेल लोगों को भूखा करने से रोक नहीं सकोगे।

बिहार की जनता
तरफ सोशलिस्ट पार्टी लोहियावादी
बिहार।

लोहिया साहित्य

राम मनोहर लोहिया समता विद्यालय न्यास
प्रकाशक विभाग, १४-७-३७१, बेगमबाजार, हैदराबाद—१२

मूल्य २५ (पैसा) बिहार प्रिंटिंग प्रेस, पटना-४